International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 11 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

जयप्रकाश नारायण और डॉ0 राममनोहर लोहिया के मार्क्सवादी विचारधारा

डॉ0 सुजीत कुमार तिवारी
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

जयप्रकाश नारायण एवं डॉ0 राममनोहर लोहिया ने भारत में समाजवाद की स्थापना के लिए लोकतांत्रिक समाजवाद को उपयुक्त माना और इस संदर्भ में उनके द्वारा विविध आयामों की चर्चा की गई है–यथा लोकतंत्र से उनका क्या मतलब है। वे किस प्रकार की लोकतांत्रिक व्यवस्था चाहते है? लोकतंत्र के माध्यम से समाजवाद की किस प्रकार स्थापना की जा सकती है? उनके द्वारा न सिर्फ लोकतांत्रिक समाजवादी मान्यता की नवीन परिकल्पना उपस्थित की गई, बल्कि इसके विविध अवधारणाओं को भी उपस्थित किया गया।
इससे यह स्पष्ट होती है कि उनकी समाजवादी मान्यताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा सकता है।

जयप्रकाश नारायण ने सर्वप्रथम यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि समाजवाद भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के लिए क्यो? और किस प्रकार उपयोगी है। प्रारंभ में जयप्रकाश नारायण मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे। लेकिन अमेरिका से स्वदेश लौटने पर भारतीय परिवेश में समाजवाद की स्थापना के लिए मार्क्सवादी मान्यताओं को उपयोगी नही समझा। अतः वे जनतांत्रिक समाजवादी मान्यताओं की ओर अग्रसर हुए। 1934 ई0 में जब 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई तो उन्होंने उसमें सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। इस क्रम में उनके द्वारा 1936 ई0 में एक छोटी सी रचना का प्रकाशन कराया गया समाजवाद क्यों? इस में उन्होंने स्पष्ट किय कि उनकी इस रचना का उद्देश्य समाजवादी सिद्धांतों की व्याख्या करना नहीं है। बल्कि इसका प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय आन्दोलन की तत्कालीन अवस्था एवं भविष्य से संबंधित कुछ समस्याओं पर विचार करना है।

उन्होंने अगे यह स्पष्ट किया कि समाजवाद के चाहे जो भी विविध रूप हों, फासीवाद के उदय एवं विश्व संकट के कारण उनमें एकता आई है। इस प्रकार समाजवाद का एक ही रूप वास्तविक है और वह मार्क्सवाद और इसी ने अपनी सार्थकता सिद्ध की है। इस प्रकार उन्होंने मार्क्सवाद को ही समाजवाद का वास्तविक रूप स्वीकार किया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि 'समाजवाद व्यक्तिगत आचरण की संहिता नहीं है। यह हमारे व्यक्तिगत अभ्यास की कोई चीज नहीं है और न ही शीशमहल में निर्मित की जानेवाली वस्तु है। जब हम भारत में समाजवाद लाने की बात करते हैं तो हमरा तात्पर्य देश की संपूर्ण आर्थिक–सामाजिक उसके खेतों, खलिहानों कारखानों, विद्यालयों आदि का पुननिर्माण कराना है।

सामाजिक संरचना का पुननिर्माण का साधनः– जयप्रकाश नारायण सामाजिक पुनर्निमाण एवं समाजवादी समाज की रचना के लिए राज–सत्ता और जनसमर्थन की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि समाज के नव–निर्माण के लिए राजसत्ता पर अधिकार आवश्यक है। राजसत्ता पर अधिकार रहने पर ही आप इसके लिए उचित कानून का निर्माण कर सकते हैं। शिक्षण एवं प्रचार के विविध साधनों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग कर सकते हैं। आपके पास प्रर्याप्त शक्ति होगी और इसका प्रयोग कर आप अपनी योजना को क्रियान्वित कर सकते हैं और संकल्प की प्राप्ति के लिए कार्य कर सकते हैं। आप राज्यसत्ता की प्राप्ति के बाद भी अपने संकल्प के प्रतिरोध को कुचल सकते हैं। इसके लिए सैन्य बल अथवा पुलिस बल का प्रयोग कर सकते हैं।

राज्य प्रत्येक विधि को क्रियान्वित करने की स्थिति में होता हैं इसका मुख्य कारण यह है कि उसके हाथों में सत्ता एवं शक्ति होती है। वह लोगों को समझा–बुझाकर अथवा बल प्रयोग कर लोगों को अपने संकल्पों को कार्यरूप में परिणत करने की स्थिति में होता है। वे इस बात से सहमति रखते हैं कि आधुनिक काल में कोई भी राजनीतिक दल राज्य की शक्ति पर अधिकार स्थापित किए बिना समाजवाद की स्थापना नहीं कर सकता। उनके अनुसार इस क्रम में यह बात महत्वपूर्ण नहीं हैं कि राज्य शक्ति पर अधिकार जनसमर्थन, क्रांति अथवा सैन्यबल के द्वारा किया जाता है।

जयप्रकाश जी के उपरोक्त विचारों से यह स्पष्ट है कि सत्तारूढ़ दल समाजवाद की स्थापना करने में सक्षम है। लेकिन समाजवाद की स्थापना के लिए जनसमर्थन भी आवश्यक है। इस प्रकार राजयसत्ता पर यदि नियंत्रण कायम है तथा जन समर्थन प्राप्त है तो समाजवाद की स्थापना सुगम रूप

में संभव है। क्योंकि राज–सत्ता से विरोधियों से निपटा जा सकता है और जनसमर्थन से समाज विरोधियों से निपटा जा सकता है। इतना ही नहीं वे यह भी मानते हैं कि यदि एक समाजवादी राज्य को बल प्रयोग की शक्ति प्राप्त है तो सुगमतापूर्वक जनसमर्थन प्राप्त हो सकता है। यदि ऐसी स्थिति नहीं है तो जनसमर्थन प्राप्त करने में कठिनाई उत्पन्न हो जायेगी। ऐसी स्थिति में भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों का समर्थन समाजवाद के विरोधियों अथवा सामाजिक पुनर्गठन करनेवाले लोगें के विरूद्ध ही प्रतिक्रियावादी शक्तियों को प्राप्त होगा।

इस प्रकार यदि उनकी इस मान्यता का विश्लेषण किया जाय तो यह कहा जा सकता है कि उनपर मार्क्सवादी चिंतन एवं गांधीवादी विचारधारा का सम्मिलित प्रभाव कायम था।

लोकतांत्रिक समाजवादः–

राष्ट्रीय आंदोलन के काल में जिस प्रकार की राजनीति की अनुभूति जयप्रकाश जी को हुई थी उससे वे काफी व्यग्र थे। और इसी का परिणाम भारत के विभाजन के रूप में सामने आया था। गांधी भी सरकार के साथ मेल मिलाप एवं समझौता के पक्ष में थे। लेकिन उनका इस संदर्भ में दृष्टिकोण अन्य कांग्रेसी नेताओं से भिन्न थां क्योंकि गांधीजी आवश्यकतानुसार एवं औचित्य के आधार पर सदा संघर्ष करते रहे। जबकि कांग्रेसी नेता इसके लिए पूर्णतः तैयार नहीं थे।

अतः जयप्रकाश नारायण को इस बात की अनुभूति हुई कि जिसप्रकार की स्वार्थी राजनीति का अवलंबन कांग्रेस के नेता कर रहे हैं, उसमें कांग्रेस के लिए समाजवाद के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना अत्याधिक कठिन होगा। अतः वे मानते थे कि यदि भारत को आर्थिक दृष्टि से संपन्न बनना है तो उसे राष्ट्रीय आंदोलन के काल में जिस प्रकार की राजनीति की अनुभूति जयप्रकाश जी को हुई थी उससे वे काफी व्यग्र थे। और इसी का परिणाम भारत के विभाजन के रूप में सामने आया था। गांधी भी सरकार के साथ मेल मिलाप एवं समझौता के पक्ष में थे। लेकिन उनका इस संदर्भ में दृष्टिकोण अन्य

कांग्रेसी नेताओं से भिन्न थां क्योंकि गांधीजी आवश्यकतानुसार एवं औचित्य के आधार पर सदा संघर्ष करते रहे। जबकि कांग्रेसी नेता इसके लिए पूर्णतः तैयार नहीं थे।

अतः जयप्रकाश नारायण को इस बात की अनुभूति हुई कि जिसप्रकार की स्वार्थी राजनीति का अवलंबन कांग्रेस के नेता कर रहे हैं, उसमें कांग्रेस के लिए समाजवाद के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना अत्याधिक कठिन होगा। अतः वे मानते थे कि यदि भारत को आर्थिक दृष्टि से संपन्न बनना है तो उसे जयप्रकाश नारायण 'बिल द सोशलिस्अ लीभ द कांग्रेस'? सत्ता की राजनीति का परित्याग करना होगा। उनकी इस प्रकार की मान्यता और विचार सुदृढ़ सोच के आधार पर आधारित था। वे चाहते थे कि शक्तिराजनीति का परित्याग किया जाय और उसके स्थान पर सहभागी लोकतंत्र की प्रक्रिया प्रारंभ की जाय। 1946 ई0 में जेल से अपनी रिहाई के बाद उन्होंने इसी
मान्यता के आधार पर कार्य करना प्रारंभ किया।

1948 ई0 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और इस प्रकार यह मात्र समाजवादी पार्टी रह गया। लेकिन लोहिया देश में समाजवाद की दिशा में अबतक हुई प्रगति से निराश थे। वे एक सच्चे अर्थो में समाजवादी दल का गठन करना चाहते थे जो संरचनात्मक एवं सैद्धांतिक दृष्टि से पूर्णतः समाजवादी हो। इस समय तक वे इस बात से आश्वस्त हो चके थे कि भारत में समाजवाद की स्थापना किसानों को संगठित कर सिर्फ लोकतांत्रिक ढंग से ही प्राप्त हो सकता ह। इतना ही नहीं वे मानने लगे थे कि सच्चे अर्थों में समाजवाद की स्थापना लोकतांत्रिक तरीके से ही संभव है। वे मार्क्सवाद के वर्गसंघर्ष
की मान्यता का अबतक पूर्णतः परित्याग कर चुके थे। वे विकासवादी ढंग से समाजवाद की स्थापना के लिए डॉ0 लोहिया एवं अशोक मेहता इत्यादि के साथ मिलकर कार्य करने लगे। वे अब इस बात पर बल देने लगे थे कि समाजवाद की सैद्धांतिक संरचना पर बल देने के बदले भारत की समस्याओं का गत्यात्मक एवं वस्तुनिष्ट विश्लेषण कर इसका निदान ढूढ़ने का प्रयास किया जाय। इसी प्रकार उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि संसंद में विपक्ष को उत्तरदायी विरोधी दल की भूमिका का निर्वाह करना चाहिए।

डॉ0 लोहिया भी सत्ता के विकेंद्रीकरण के पक्षघर थे। उन्होंने इसी पृष्टभूमि में चौखम्मा राज की योजना का विश्लेषण किया है। इस योजना में भी उन्होंने ग्राम पंचायतों को सत्ता का मुख्य केंद्र बनाने की योजनाओं की है तथा प्रान्तीय एवं संघीय सरकारों को सीमित शक्तियां प्रदान करने पर बल दिया है। इन दोनों का ही अंतिम उद्देश्य एक समतामूलक ऐसे समाज का निर्माण करना था जिसमें स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व एवं शांति हो।

लेकिन, जयप्रकाश नारायण अपने जीवन के अंतिम दिनों में समाजवाद के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सर्वोदय को अपना लक्ष्य बनाया और भूदान आंदोलन में सक्रीय हो गए। वे इस आंदोलन को अपना जीवन ही दान में दे दिया। जबकि लोहिया आजीवन समाजवादी दल को संगठित कर इस उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर हुए। जहांतक समाजवाद के लक्ष्य की प्राप्ति का प्रश्न है इसके लिए ये दोनों भी भारतीय विद्वान गांधीवादी साधनों को उपयोग में लाने के पक्ष में थे। इसी क्रम में डॉ0 राम मनोहर लोहिया द्वारा सप्तक्रांति के सिद्धांत का प्रतिपादन अपने जीवन के अंतिम दिनों में किया गया। इसके माध्यम से वे समाजवाद के अंतिम लक्ष्य तक पहुंचना चाहते थे। वे एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे जिसमें शोषण, उत्पीड़न, अन्याय और अत्याचार न हो। सभी लोगों को सच्चे अर्थो में स्वतंत्रता प्राप्त हो। समाज में समानता एवं भ्रातृत्व भावना कायम हो।

अतः उन्होंने 1975 ई0 में संकटकाल की उद्घोषणा से ठीक पूर्व 'संपूर्ण क्रांति' का नारा दिया। इसका मुख्य उद्देश्य समाज एवं राज्य में वर्तमान शोषण, उत्पीड़न, अन्याय, सर्वाधिकारवादी प्रवृतियों का अंत एवं एक नवीन समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण करना था। इस प्रकार गांधीवादी साधन या तकनीक का उपयोग करने के साथ–ही–साथ जयप्रकाश नारायण द्वारा जहां 'संपूर्ण क्रांति' का आह्वान किया गया वही डॉ0 लोहिया ने 'सप्त क्रांति' की अपनी योजना उपस्थित की। अतः इन दोनों विचारकों की तकनीकी या साधनों की तुलना वांछनीय प्रतीत होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. रामचन्द्र गुप्ता, पू0 उ0, पृ0–83–85 ।
2. जयप्रकाश नारायण, फ्रॉम सोशलिज्म टू सर्वोदय, अध्याय पृ0–28 ।
3. वही ।
4. राम मनोहर, लोहिया, मार्क्स, गांधी एण्ड सोशलिज्म, पू0 उ0,
5. पृ0–519
6. राम मनोहर लोहिया, ह्वील ऑफ हिस्ट्री, (हैदराबाद, 1963), पृ0–28।
7. राम मनोहर लोहिया, द बिल टू पावन एण्ड अदर राइटिंग्स (हैदराबाद, 1956), पृ0–58 ।